www.faithbook.in

Faithbook®
ACTIVITIES BEYOND BOOK

13th FEBRUARY 2022
Issue 17

BOOK 029

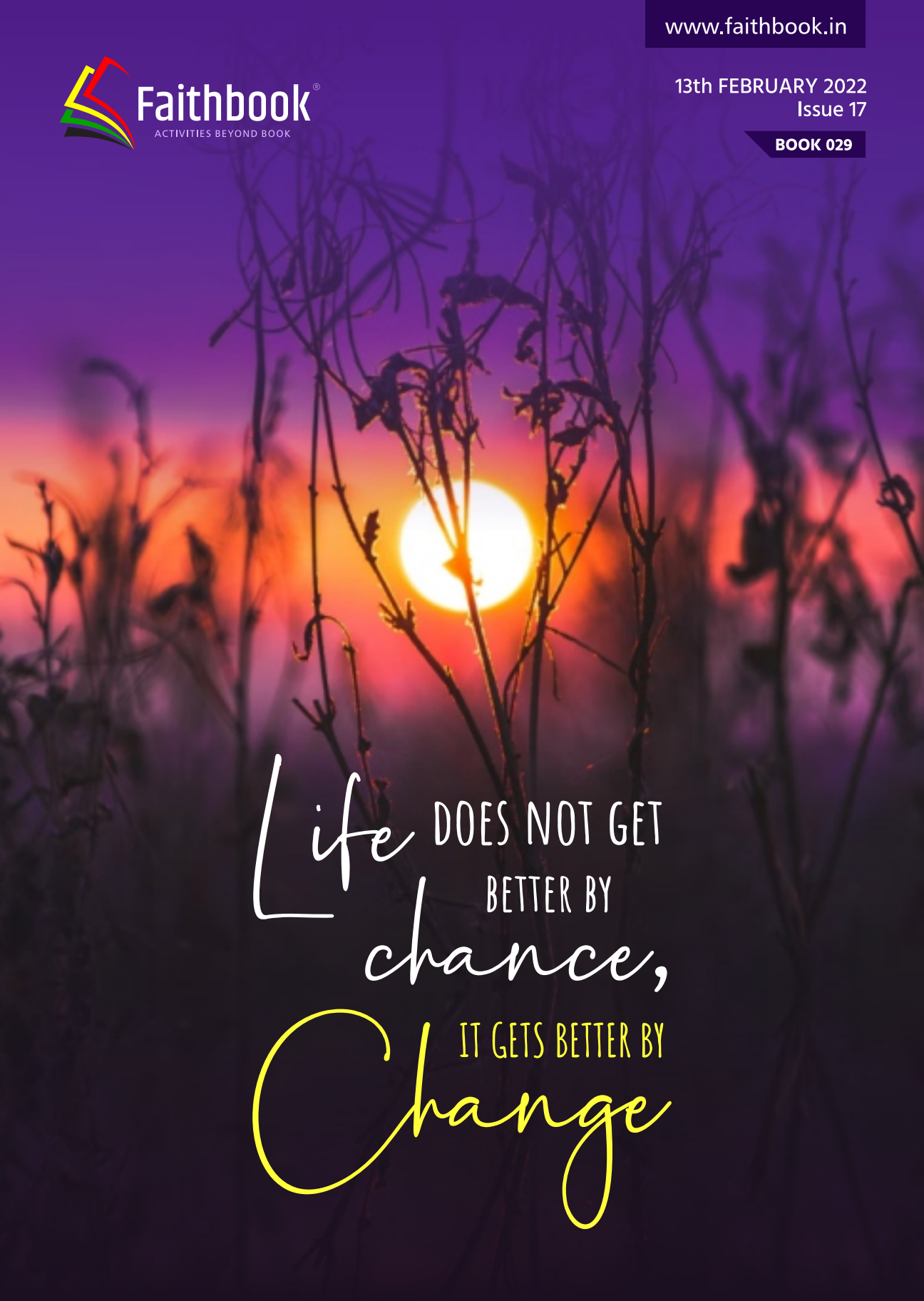

॥ वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥
॥ पूज्याचार्य श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जयसुंदरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः॥

प्रेरणा : पूज्य मुनिराज श्री युगंधर विजयजी म.सा. के शिष्य
पूज्य मुनिराज श्री शंत्रुजय विजयजी म.सा. के शिष्य
पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक : नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook
शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक : शौर्य शांति ट्रस्ट
C/O विपुलभाई झवेरी
VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time : 2pm to 7pm)
Mobile – 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095

Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

सम्यक् ज्ञान का का तेज किरण

सादर प्रणाम,

परमोपकारी वीर प्रभु के जिनशासन में विद्वद्वर्य श्रमणों द्वारा अगाध सम्यक् ज्ञान प्रसारित किया जा रहा है और 21000 साल तक किया जाएगा। उसी दिशा में Faithbook द्वारा किया गया छोटा सा प्रयास आज ऐसे मुकाम पर पहुंचा है की Faithbook के लेख पर आधारित Open book online परीक्षा दूसरी बार होने जा रही है जो 20 मार्च के दिन होगी!

देव-गुरु कृपा से और आप सभी के शुभाशीर्वाद से फिर एक बार नये लेख लेकर Faithbook आपके लिए प्रस्तुत होने जा रहा है, यह सभी पाठकों को सुचित करते हुए हमें बेहद आनंद महसूस हो रहा है! इसे पढ़के आप सभी का जीवन मंगलमय बने यही शुभकामना !!

– नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

INDEX

मांस का उपयोग किस लिए नहीं? 01
पू. ग. आ. श्री राजेंद्र सूरीश्वरजी म.सा.

देवद्रव्य की रकम से समाज सेवा के कार्य करने चाहिए? 05
पू. आ. श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

Everything is Online, We are Offline 11.0 10
पू. मु. श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

पिया, पर-घर मत जाओ रे 16
प्रियम्

गोडीजी का इतिहास – 5 21
पू. मु. श्री धनंजय विजयजी म.सा.

साधक का अलंकार 26
पू. मु. श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

पैसा याँ बुद्धि 28
पू. मु. श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

Temper : A Terror – 15 30
पू. मु. श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

FaithbookOnline

You can Read our Faithbook Knowledge Book in English & Hindi on our website's blog Visit : **www.faithbook.in**

मांस का उपयोग किस लिए नहीं?

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री राजेंद्र सूरीश्वरजी म.सा.

मांसाहारी और शाकाहारी में अंतर

	मांसाहारी पशु के लक्षण	शाकाहारी मनुष्य के लक्षण
1	दूसरों को फाड़ डालने के लिए टेढ़े और वज्र समान तेज नख।	मनुष्य के नख वैसे नहीं है। वधशाला में शस्त्र से काम लेना पड़ता है।
2	जठराग्नि में कच्चा मांस पचाने की शक्ति है।	मनुष्य में यह शक्ति नहीं है।
3	दिन में सोते है; रात्रि में भोजन ढूंढते है।	दिन में भोजन और रात को आराम करते है।
4	भोजन चबाना नहीं पड़ता।	चबाकर भोजन खाता है। (तभी पचता है और रोग नहीं होता।)
5	जीभ से चाट कर पानी पीते हैं।	घूंट भरकर जल पीते हैं।
6	श्रम करने से पसीना नहीं आता।	श्रम करने में पसीना आता है।
7	जब शेर आदि जानवरों को पसीना आता है, तब उनकी प्रकृति बिगडी मानी जाती है।	मनुष्य को पसीना न आए तब ज्वरादि के कारण बीमार माना जाता है, पसीना आने पर स्वस्थता के योग्य।
8	हिंसक प्राणियों के दांतों व दाढ़ों में दांता जैसी तेजी है। मानव केवल मांसाहार से जीवन निर्वाह नहीं कर सकता। उसे वनस्पति जन्य भोजन लेने की अनिवार्य आवश्यकता पड़ती है।	मनुष्य के दांतों, दाढ़ों में ऐसी तीक्ष्णता नहीं होती। शाकाहारी को मांस की कदापि आवश्यकता नहीं। वह शाकाहार से समस्त जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करता है।

मांस का उपयोग किस लिए नहीं?

- क्योंकि यह मनुष्य का वास्तविक भोजन नहीं, सृष्टि के विरुद्ध है
- आरोग्य तथा आयु में बाधक, अनुचित, अपथ्य -कर, अहितकर भोजन है।
- मांस का रूप नेत्रों को रुचिकर नहीं लगता है।
- इससे दुर्गन्ध आती है।
- अपवित्र माना जाता है।
- मांस का भक्षण क्रूर कृत्य है
- प्राणी का वध करते समय उसका खून इतना उबल उठता है कि इसका उग्र प्रभाव भक्षक पर पड़ता है।
- मांस खाना धर्म नहीं, अधर्म है। यथार्थ में जीवन दयावान होता है। दया के बिना जप, तप, व्रत व्यर्थ हो जाते हैं।
- मनुष्य का आधार वीर्य शक्ति पर है, मांस पर नहीं।
- मांस खाने से शक्ति बढ़ती नहीं। मांस न खाने वाले, हाथी, ऊँट, जिराफ, हिरण, घोडा, बंदरादि प्राणी शक्तिशालियों में विशेष स्थान रखते हैं।
- अन्न, फल, दूध आदि पदार्थों से शारीरिक स्वस्थता अति उत्तम रहती है। मांस से स्वास्थ्य का नाश होता है।
- जार्ज बर्नाड शॉ ने एक भोज में कहा था, मेरा पेट कब्रस्तान नहीं है।
- प्रकृति का नियम है कि बड़े छोटों की रक्षा करें।
- मांस इस लोक में केंसर जैसे भंयकर रोग का और परलोक में भयावह नरक का उपहार देता है।

मांसाहार पर डाक्टरों के अभिमत

1. डाक्टर रोबर्ट बेल एम.डी.ने 'केंसर स्कर्ज एण्ड हाउ टू डिस्ट्रोय इट' नामक अपनी पुस्तक में लिखा है, 'दो करोड़ और पचास लाख मनुष्य तथा केवल इंग्लैंड और वेल्स में तीस हजार मनुष्य केंसर से मरे, मुख्य कारण मांसाहार था। अतः मैं इसका प्रबल निषेध करता हूँ। आज दिन दिन संख्या बढ़ रही है।

2. डाक्टर बेज चीन की यात्रा करने गए। उस समय उन्होंने चार शाकाहारी श्रमिक अपने को उठाने के लिए रखे। बारी बारी से दो-दो व्यक्ति उन्हें उठाते थे। तीन दिन पश्चात उन्हें मांसाहार दिया गया तब वे श्रमिक थक जाते थे। इससे प्रत्यक्ष सिद्ध होता है कि मांसाहार से कार्य क्षमता घट जाती है।

3. डा. सरवाल्टर स्कोट फरग्युसन ने लिखा है कि 65 वर्ष की आयु में अपनी कक्षा में भाषण देते हुए उन्हें लकवा हो गया। उनकी सेवा शुश्रूषा के लिए उनके मित्र रसायन शास्त्री डा. ब्लेक को बुलाया। उन्होंने शाकाहार का परामर्श दिया। वे निरोग और बलशाली शरीर के साथ 30 वर्ष अधिक जीवित रहे।

4. डा. स्मिथ का कथन है कि ईरान के एक अप्रसिद्ध वन स्थान से अतीव सत्ताशाली और भव्य राज्य का निर्माण करनेवाला बादशाह सैरल बाल्यकाल से ही बहुत ही सादा वनस्पति भोजन खाता था। उसके सैनिक रोटी, सागपात तेल से निर्वाह करते थे। तो भी थोड़े समय में ही हजारों मील की कूच करने में समर्थ थे। उन्होंने अनेक युद्धों में विजय प्राप्त की। वे बम की सेना से भी नहीं डरते थे।

5. डा. हेग का कथन है कि पाचन शक्ति की, हृदय और पित्त बढ़ने की तथा सिर दर्द के साथ की अन्य पीड़ाएँ रक्त में मांसाहार से बढ़े हुए यूरिक एसिड के कारण होती है।

6. डा. हेग लिखते हैं कि मांस खाने वालों और अपेय पीने वालों में घाव या चीट के कारण जो भय, अंग, अंग का टूटना तथा उनसे भी बढ़कर अन्य अनिष्ट परिणाम दृष्टीगोचर होते हैं। वे उनकी तुलना में मांस तथा अपेय का परहेज रखने वालों में बहुत कम दिखाई देते हैं। मांसाहारी अधिक पीडा के शिकार बनते हैं। शारीरिक हानि के अतिरिक्त उपचार में आर्थिक हानि भी होती है।

7. अमरिका के हार्वर्ड मेडिकल स्कूल के डाक्टर. ए. वाचमैन व डा. बी स. बनस्टीन लैसेंट 1668 भाग एक तथा 658 पृष्ठ पर अपनी वैज्ञानिक शोध के परिणाम में लिखते हैं कि मांस भक्षण से हड्डियां कमजोर हो जाती है।

मांसाहारी का मूत्र (यूरिक ऐसिड) तेजाब जैसा होता है। अतः रक्त व तेजाब के क्षार की

मात्रा संरक्षित रखने के लिए अस्थियों से क्षार और तेजाबी नामक रक्त में मिल जाता है। इसके विपरीत शाकहारियों का मूत्र क्षार युक्त होता है उनकी हड्डियों का खार रक्त में न मिलकर वहीं रहता है। वह उन्हें दृढ़ बनता है। इस प्रकार जिन व्यक्तियों की हड्डियों निर्बल होती है, उन्हें विशेषतः फल, फूल, शाक, भाजी, प्रोटीन और दूध का आहार लेना चाहिए। मांस का अल्पांश भी उनके जीवन कि लिए हितकर नहीं।

8. रसायन शास्त्री डा. विसंगाल्ट अपनी पुस्तक में लिखते है कि प्रत्येक 100 भाग में 36 भाग पौष्टिक अंश और 64 भाग पानी होता है। अन्न में 80 % से 90 % पौष्टिक तत्त्व होते है। इसके अतिरिक्त विद्युत अग्नि का तत्त्व भी अनाज में है। उससे अस्थियों में वृद्धि और प्रबलता होती है यह तत्त्व जिस अंश में वनस्पति में है, उस अंश मांस में नहीं।

9. डा. ज्योर्ज विलसन का मत है कि मांस में उष्णता उत्साहकजनक अंश 8 से 10 तक है, गेहूँ, चावल, चने आदि में 60 से 80 अंश तक है।

10. एडम स्मिथ की पुस्तक के पृष्ठ 370 पर लिखा है कि अनाज घी, दूध व अन्य वनस्पति के भोजन से, बिना मांस भक्षण किए सरलता से यथेष्ट स्वस्थता, पौष्टिकता और शारीरिक, मानसिक शक्ति प्राप्त की जा सकती है।

11. डब्ल्यू गिन्सन वॉर्ड F.R.S.C ने पत्र में लिखा है कि में 30 वर्ष से मदिरा, मांस या मछली का उपयोग न करते हुए केवल वनस्पति व फलाहार पर निर्वाह करके पूरे अनुभव के साथ लिख रहा हूँ कि चरबी वाले एक हजार मनुष्यों में से एक व्यक्ति भी फेफड़ों के विषय में मेरी तुलना में नहीं ठहर सकता। शरीर के अवयवों के बल में कुछ बराबरी कर सकता है। इस अनुभव के आधार पर साहसपूर्वक कहता हूँ कि वनस्पति आहार द्वारा पोषण प्राप्त करने वाले बालक से लेकर सब सुखी और सबल होते है।

12. मिस्टर फलेमिंग का कथन है कि मांस काटने से पूर्व प्राणी में होने वाले रोगों की परीक्षा उसकी जीवीत अवस्था में नहीं होती। फलतः उसके रोगों का उत्तराधिकार मांसाहारी को मिल जाता है और उसका जीवन संकट म पड़ जाता है।

13. डा.केमेरन ने अनुभव से कहा है कि कंधे और पांव में होने वाली सूजन के रोग पशुओं के ही हैं। मांसाहार के साथ वे मानव शरीर में प्रविष्ट हो जाते है।

प्रतिकार

देवद्रव्य की रकम से समाज सेवा के कार्य करने चाहिए?

पूज्य आचार्य श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

बैंकों में देवद्रव्य के करोड़ों रुपये ऐसे ही निष्क्रिय पड़े रहते हैं, तो उसका उपयोग दुष्काल राहत में, या भूकंप पीड़ितों के लिए, या अनाथ बच्चों के लिए, या गरीबों के एजुकेशन के लिए, या गरीबों को मेडिकल सहायता के लिए नहीं करना चाहिये? मतलब, कि बचे हुए देवद्रव्य से समाज सेवा के काम नहीं कर लेने चाहिये? आखिर जन सेवा यही प्रभु सेवा ही है ना! इस प्रकार के प्रश्न का उत्तर हमने पिछले लेख में थोड़ा देखा था इस लेख में विस्तार से देखते हैं।

सर्वप्रथम बात यह है, कि बैंक में जो करोड़ों रुपये पड़े हैं, वे बैंक में ऐसे ही पड़े रहते हैं, या बैंक उस रकम को अलग-अलग कंपनियों को, इंडस्ट्रीज़ को, लोन के रुप में देखकर हर साल करोड़ों का ब्याज कमाती है। और वे कंपनियाँ भी उस रकम के आधार पर अपनी इंडस्ट्री चलाकर करोड़ों रूपयों की कमाई करती है। देश की जी-डी-पी में वृद्धि करती हैं। हजारों लोगों को रोजगार मिलता है। उन कंपनियों के शेरहोल्डर्स को भी इससे लाभ होता है। यदि यह सब होता हो, तो देवद्रव्य के करोड़ों रुपये निष्फल पड़े रहे, ऐसा कैसे कह सकते हैं? इसलिए इस प्रश्न की बुनियाद ही गलत है, ऐसा नहीं लगता है?

और मान लो कि इस रकम से समाज सेवा के कार्य करने हैं, तो यह काम कौन करेगा? रकम किसे देनी चाहिए?

यह रकम सरकार को देने का कोई विशेष मतलब है? खुद राजीव गांधी का स्टेटमेंट था कि सरकार लोक कल्याण के लिए 1 रुपया मंजूर करती है, तो उसमें से लोगों के पास मुश्किल से पंद्रह पैसे पहुँचते हैं। (और यदि कोई बड़ा घोटाला हो गया तो उस पंद्रह पैसों का भी...)

हमारी किसी संस्था को समाज सेवा करनी हो तो, 'मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना' कोई कहेगा कारगिल युद्ध के शहीदों के लिए दो, कोई कहेगा अकाल राहत में दो, कोई कहेगा अनाथ आश्रम में दो, कोई गरीबों के एजुकेशन इत्यादि तरह-तरह का सुझाव आएँगे। कहीं पर इसके नाम पर झगड़े हो जाएँ तो भी आश्चर्य नहीं है। इससे अच्छा, शास्त्रों में जब स्पष्ट मार्गदर्शन दिया ही है तो व्यर्थ में नए विकल्प बड़े करने में कोई भी समझदारी नहीं है।

हकीकत यह है कि इस रकम को अन्य किसी भी उद्देश्य में डाइवर्ट करने का अधिकार सरकार को नहीं है, ना किसी संस्था को, ना ही श्रावकों को, ना ही ट्रस्टियों को, और ना ही गुरु भगवंतो को है।

और 'मानव सेवा यही प्रभु सेवा' आदि नारे लगाने वालों को कहना चाहिए कि जिन गरीब, दुःखी और अनाथ मानवों को आप प्रभु की कक्षा में बिठाते हो; तो प्रभु को जिस तरह साष्टांग दंडवत प्रणाम करते हो, वैसे ही इन मानवों को भी करो। वास्तविकता यह होती है, कि ऐसे नारे लगाने वालों को और मंदिर के पैसों को इन सभी की सेवा में लगा देने की बड़ी-बड़ी सलाह देने वालों को सिर्फ इसके द्वारा 'हम गरीबों के बेली हैं', ऐसी मिथ्या क्रेडिट पाने के सिवा इन दुःखियों में कोई रुचि नहीं होती है। ऐसे लोग ना तो अपनी गाँठ का एक पैसा गरीबों को देते हैं, ना ही अपना टाइम देते हैं, ना ही गरीबों की मुश्किलों को सुनने समझने की भावना दर्शाते हैं। कभी-कभी दुत्कारते हो, या तिरस्कार करते हो तो हैरत नहीं है।

दूसरी समझने जैसी बात यह है कि देरासर में प्रतिमा रूप जो परमात्मा होते हैं, वे चाहे कुछ भी बोलते नहीं है, फिर भी अपनी भक्ति करने वालों को दया, दान, परोपकार आदि की प्रेरणा करते ही हैं। यह प्रभु का अचिंत्य प्रभाव है। जहाँ रोज लाखों करोड़ों का शॉपिंग होता है, ऐसे मॉल के बाहर आपको पानीपुरी वाला देखने को मिलेगा, पर भिखारी देखने को नहीं मिलेगा। देरासर के बाहर भिखारी देखने को मिलेगा, पर पानीपुरी वाला देखने को नहीं मिलेगा। खाने वाले कहाँ होते हैं, और खिलाने वाले कहाँ होते हैं, इतनी सेंस तो भिखारी को भी होती है।

यदि देवद्रव्य ही नहीं होगा तो देरासर कैसे टिकेंगे?

यदि देरासर ही नहीं होगा तो प्रभु भक्ति कैसे होगी?

यदि प्रभु भक्ति ही नहीं होगी तो दया, दान आदि की सत्प्रेरणा कैसे मिलेगी?

यह सब प्रेरणा, और गुरु भगवंतो की प्रेरणा से जैन लोग समाज सेवा के और अनुकंपा के करोड़ों रुपये के कार्य करते ही हैं। इसके कुछ उदाहरण देखते हैं:

- भगवान महावीर ने दीक्षा लेने से पहले 12 महीने तक लाखों गरीबों को अरबों रुपयों का वर्षीदान देकर प्रजा का उद्धार किया था।

- पू. श्री सिद्धसेनदिवाकरसूरिजी के उपदेश से विक्रम नृपति ने हजारों कर्जदारों का कर्ज चुका -कर पृथ्वी को ऋणमुक्त किया था। इसीलिए तो उनके नाम से विक्रम संवत् की प्रवर्तना हुई थी।
- पू. श्री हेमचंद्रसूरिजी महाराजा के उपदेश से राजा कुमारपाल ने बिना पुत्र वाली विधवाओं की वार्षिक 72 लाख रुपयों की आवक को उदारतापूर्वक माफ कर दिया था।
- पू. श्री धर्मघोषसूरिजी महाराज के उपदेश से जगडूशा ने 3 वर्ष के भारी आकाल में भारत में जगह-जगह अन्न के भरे हुए गोदामों में से लाखों टन अनाज का उदारता से दान करके देश की प्रजा का उद्धार किया था।
- पू. जैनाचार्य के आशीर्वाद पाकर भामाशाह ने 12 वर्ष तक हर महीने (या साल) में 25000 सैनिकों की सेना को स्वर्ण मुद्राओं का वेतन चुका सके, उतना धन चित्तौड़ दीपक राणा प्रताप को अर्पण कर के आखिर में देश को बचा लिया था।
- अहमदाबाद को लूटने आए हुए मराठा सरदारों को अपना खुद का अखूट धन अर्पण करके अहमदाबाद को लुटने से बचाने वाले वखत-चंद जैन नगर सेठ की कीर्ति पताका आज भी आसमान में लहरा रही है।
- 16वीं शताब्दी में धोलका के पास के हडाला गांव के खेमो देदरानी ने महमूद बेगड़ा की विनती से भयंकर दुकाल में 12 महीने तक पूरे गुजरात को अनाज पहुँचा कर प्रजा को बचा लिया था।
- 18वीं सदी में अहमदाबाद के मनिया दोशी ने दुकाल में 18 महीने तक अन्न, वस्त्र, गुड़ आदि

का वितरण करके प्रजा को मरने से बचाया था।

जैन इतिहास में तो ऐसे हजारों उदाहरण देखने को मिल सकते हैं। अभी विस्तार नहीं करना है।

ऐसे तो वर्तमान में भी ढेरों उदाहरण हैं। अभी कुछ ही सालों पहले अहमदाबाद के एक श्रावक ने थोड़े ही महीनों में गुजरात के गाँव-गाँव में जरूरत-मंद परिवारों को कुल मिलाकर 50 करोड़ (रिपीट 50 करोड़ रुपयों) का दान किया था।

उनसे प्रेरणा लेकर दूसरे भी अनेक सेवकों ने अपनी अपनी शक्ति अनुसार 2-5-10 करोड़ का दान अन्य जरूरतमंद परिवारों को किया था।

सूरत गोपीपुरा में 'श्री महावीर अन्नक्षेत्र' हर रोज 2500 से ज्यादा गरीबों को बिना मूल्य भोजन कितने सालों से करा रहा है।

मुंबई का एक परिवार टाटा हॉस्पिटल में गरीब कैंसर पेशेंट को दैनिक हजारों रुपयों की दवाइयाँ बिना मूल्य के देता है।

उस हॉस्पिटल के करीब का एक जैन संघ कैंसर के पेशेंट को और गाँव से आए हुए उनके स्वजनों को सात्विक भोजन देता है; ये सब कार्य भी कई सालों से चल रहे हैं।

पूरे देश में सैकड़ों खिचड़ी घर चल रहे हैं, जो भूखों को बिना मूल्य भोजन देते हैं। गर्मियों में सिर्फ पानी की प्याऊ ही नहीं, छाछ केंद्र भी गाँव-गाँव में जैनियों द्वारा खोले जाते हैं। वह अमृत समान छाछ गर्मी की आग को तो ठंडा करती ही है, साथ में शरीर को सुंदर पोषण भी देती है।

गुजरात और राजस्थान की सैकड़ों पांजरा -पोल ज्यादातर जैनों के दान पर ही चलती है। दुष्काल के वर्षों में मालधारी लोग अपने पशुओं को पांजरापोल में छोड़ जाते हैं। पांजरा-पोल 8-10 महीने बिना मूल्य सभी पशुओं को संभालती है।

फिर बरसात होने पर मालधारी अपने अपने पशुओं को वापस ले जाते हैं। और उनके द्वारा अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

जहाँ हमारा तीर्थ होता है, वहाँ के गाँव को और गाँव की जनता को तीर्थ की ओर से बहुत सारी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। बहुत से स्थलों पर सार्व-जनिक दवाखाने में सिर्फ दो-पाँच रुपयों की फीस लेकर गरीब रोगियों की ट्रीटमेंट की जाती है, जिसका लाभ सैकड़ों मरीज लेते हैं।

भारत देश के अनेक शहरों में अनेक बड़ी-बड़ी हॉस्पिटल हैं, जैसे अहमदाबाद में वी.एस. हॉस्पि-टल जैनों ने बनाई है, उसी तरह सैकड़ों बड़ी स्कूल कॉलेज भी जैनों की है।

दुष्काल, बाढ़, भूकंप आदि आपदाएँ तकरीबन हर वर्ष में भारत में कहीं ना कहीं होती रहती है। हर साल उसमें जैनों के मात्र करोड़ों रुपए ही नहीं, पर युवा कार्यकर्ता भी अपना काम-धंधा बंद करके 15 दिन, एक महीना या अनेक महीनों तक पीड़ितों की सेवा करते रहते हैं।

ऐसे कार्यों के लिस्ट की कोई सीमा नहीं है, हम सिर्फ कोरोना लॉकडाउन के बारे में देखते हैं:

कमाई बंद हो जाने पर भी जिन्होंने सादर में भक्ति जीव दया अनुकंपा में लाखों करोड़ों की दान की नदियां बहायी... छोटे लोगों को साथ लेकर सहारा दिया...

अनेक संघों और श्रावकों ने 60 बेड, 80 बेड, 100 बेड, 200 बेड के कोविड-19 सेंटरों को खोल कर हॉस्पिटलों से 5-7 गुना कम खर्चे में अच्छे से अच्छी ट्रीटमेंट दी, और उससे भी अच्छा बेहतर प्रफुल्लित वातावरण देकर कोरोना पेशेंट को शीघ्र अच्छा किया।

बेंगलुरु में जैन संघ ने एक विशाल मैदान में रसोईघर खोलकर कोरोना से संबंधित सारी सावधानी रखते हुए रोज 50,000 (फिर से पढ़िए रोज 50,000) लोगों की अनुकंपा हो उतनी रसोई बनवायी और अलग-अलग विस्तार में जरूरतमंदों के पेट की आग बुझाई।

अन्यत्र कहीं पर 10000, कहीं पर 6000, कहीं पर 5000 लोगों को हर रोज खाना खिलाया गया।

इन सब बातों को प्रशासन ने नोटिस किया और न्यूज़ चैनल में भी इन बातों को प्रसारित किया गया है।

अरे! अनेक 8-10 घर के छोटे-छोटे संघों ने भी 200-250-300 लोगों को रोज फूड पैकेट्स दिए हैं। (मेरा युवक मंडल को आह्वान है कि किसी को साथ में लेकर भारत भर के जैन संघों ने अनुकंपा के ऐसे जो-जो कार्य किए हो, उसकी जानकारी इकट्ठा करके लोगों के समक्ष पेश करें। यह भी शासन प्रभावना का एक बहुत बड़ा अनुष्ठान बन जाएगा।) इनमें से अनेक संघ तो ऐसे है कि जहाँ महात्माओं का विचरण, जिनवाणी श्रवण, प्रेरणा आदि बिल्कुल ना के बराबर है, पर देरासर-प्रभुभक्ति के प्रभाव से जीवदया, अनुकंपा, परोपकार और उदारता सहज ही देखने को मिली।

हम फिर से याद कर लेते हैं। देवद्रव्य है तो देरासर है, प्रभुभक्ति है, प्रभु की सत्प्रेरणा है, और ये सारे सत्कार्य हैं।

और एक बार यदि देवद्रव्य समाजसेवा आदि के नाम से, शास्त्र विरुद्ध जाकर भी खर्च कर डाला, तो फिर उस खर्च किये गए देवद्रव्य से भी 10-20 या 50 गुना के खर्च से हो रहे यह सब सत्कार्य रुक नही जायेंगे? यह सुज्ञ जनों को सोचने वाली बात है।

(17वें और 18वें लेख में लोक कल्याण तथा धार्मिक थापण और विचारों की दीवादांडी... इन दो पुस्तकों का सहारा लिया गया है, धन्यवाद)

Everything is Online, We are Offline 11.0

पूज्य मुनिराज श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

पति : प्यास लगी है, पानी लेकर आओ।

पत्नी : सोच रही हूँ, क्यों ना मटर पनीर और शाही पुलाव बनाकर खिलाऊँ...

पति : वाह-वाह...! मुँह में पानी आ गया।

पत्नी : आ गया ना मुँह में पानी, बस इसी से काम चला लो।

(रसोई बनाने की बात छोड़ो पानी देने से भी पत्नी बच गई।)

एक मजबूर ने प्रश्न किया, 'जिंदगी की वास्तविक समस्याओं का निपटारा करने की ताकत ना हो तो?'

'काल्पनिक विश्व को ही अपनी जिंदगी बना लो।' एक हास्य कलाकार ने जवाब दिया।

'हमारे पास खाने के लिए ब्रेड नहीं है, हमें खाना दो।' भूख से पीड़ित जनता ने माँग रखी, मगर क्रूर रानी ने जवाब दिया, 'ब्रेड खाने को ना हो तो केक खा लो।'

हाँ... जी... यह एक सत्य वाकया है। इन तीनों प्रसंगों में से एक सत्य उभर कर बाहर निकलता है और वो सत्य हैं, आप की समस्याओं का वास्तविक समाधान नहीं, काल्पनिक समाधान प्रस्तुत किया जाने वाला है। साथ में आपके दिमाग में यह बात फिट करने की कोशिश लगातार की जायेगी कि, हम आपको जो समाधान बता रहे है वो ही आखिरी सत्य है, वो ही वास्तविक है, वो ही सर्वोपरि समाधान है।

एक बंदे ने हँसते-हँसते अपने मित्र को कहा, 'लेनदार मेरे पास 5 करोड़ रूपये माँग रहा था मगर मैं नहीं दूँगा तो भी वो मुझसे अब माँगने वाला नहीं है।'

मित्र ने पूछा, 'ऐसा कैसे हो सकता है?'

उसने जवाब दिया, 'दो दिन के बाद मेरी प्लास्टिक सर्जरी होने वाली है। मेरा चेहरा, मेरी शक्ल ही बदल जायेगी, फिर मुझे वो पहचान नहीं पायेगा, तो मुझसे पैसे कैसे माँगेगा?'

फेसबुक पर इतने सारे इल्जाम लग रहे थे कि बात ना पूछो। कभी हेट स्पीच का, कभी अश्लील मैसेज का, कभी बच्चों को बिगाड़ने का, कभी गंदी आदतों में युवाओं को बर्बाद करने का,

facebook > Meta

इन सारे इल्जामों से निजात (छुटकारा) पाने के साथ-साथ दुनिया की वास्तविक समस्याओं से लोगों का ध्यान भटकाने के लिए फेसबुक अब अपनी प्लास्टिक सर्जरी करवा रहा है।

उन्होंने अपना नाम ही बदल दिया है और फेसबुक के इस नये अवतार को दुनिया 'मेटा' के नाम से जानती है।

हिंदी भाषा में भजन है 'मेटो-मेटो जी संकट हमारा तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण, पारस प्यारा... मेटो... मेटो... जी संकट हमारा...'

आश्चर्य इस बात का है कि भजन में प्रयुक्त 'मेटो' शब्द और फेसबुक का नया नाम 'मेटा' दोनों का अर्थ समान है। हिब्रु भाषा में 'मेटा' का अर्थ है 'मुर्दा या मृत्यु (Death)' और हिन्दी भाषा में 'मिट जाना, किसी को मिटा देना' इन सारे अर्थों में 'मेटो-मिटाओ-मिट जाओ ' प्रयुक्त होता आया है।

चलो, हम 'मेटा' का अब वास्तविक अर्थ एवं वास्तविक कार्य जानने की कोशिश करते हैं।

सुप्रसिद्ध गुजराती पत्रकार श्री संजयभाई वोरा अपने 16 नवम्बर 2021 के एक लेख में लिख रहे है कि, 'मेटा' का अर्थ 'पर (अन्य)'

होता हैं और 'वर्स' का अर्थ 'दुनिया' होता है। मेटावर्स हम सभी को इस दुनिया से कोई दूसरी ही काल्पनिक दुनिया (Beyond World आपकी कल्पना से परे ऐसी दुनिया) में ले जाना चाहती है।

मेटावर्स शब्द का उपयोग सन् -1992 में सायन्स फिक्शन लेखक नील स्टिफन्सन ने अपनी नोवेल (उपन्यास) 'स्नोक्रेश' में किया था। जिसमें अरबों लोग इन्टरनेट और 3-डी तकनीक से अपना काल्पनिक अवतार बनाकर अपनी मनपसंद जगह पर पहुँचते हैं।

काल्पनिक लोगों के साथ काल्पनिक जिंदगी बिताते हैं। काल्पनिक धंधा करते हैं और उसके लिए काल्पनिक क्रिप्टोकरेन्सी का उपयोग भी करते हैं बाद में अपनी असली जिदंगी में वापिस लौटते हैं।

मेटावर्स बच्चों के द्वारा खेली जाने वाली 3-डी गेम्स का एक विस्तृत स्वरुप है, लेकिन वो बच्चों के खेल से बहुत ही विशिष्ट है।

मेटा के द्वारा दूर-सुदूर बसे हुए लोगों को आप मिल पायेंगे (दूर का अर्थ दूर तक ले जाना है, मरे हुए लोगों को भी मिल पाने की सहूलियत 'मेटा' में मिलेगी।) उन लोगों के पास से शिक्षा का अनुभव भी ले सकेंगे। इतना ही नहीं, उनके साथ धंधा भी कर पायेंगे।

वर्तमान में ग्राहक को अपना फ्लेट बेचने हेतु बिल्डर जैसे वर्चुअल टूर करवाता है, वह भी 'मेटा' का ही प्रारंभिक स्वरुप है।

हम इन्सानों को वैसे भी एक जगह स्थिर रह कर बैठना पसंद नहीं हैं। घर से दुकान, गाँव से शहर, देश से विदेश और इस लोक से परलोक का प्रवास करने की हमें बहुत पुरानी आदत है, मगर साथ में हमें अपनी मनपसंद जगह पर जाना ही पसंद है और हमारा नसीब ऐसा है कि, नापसंद जगह पे भी जाना पड़ता है। नापसंद व्यक्ति से भी रिश्ते बनाने पड़ते हैं। नापसंद चीजों को भी अपनाना पड़ता है। नापसंद कार्यों को भी करना पड़ता है।

मेटावर्स के द्वारा फेसबुक, गूगल, माइक्रोसोफ्ट (और अब तो) वॉल्ट डिज़्नी (भी) जैसी जायेन्ट टेक

कंपनियाँ एक काल्पनिक दुनिया का सृजन करने जा रही है, जहाँ पर वे हमें टेक्नोलोजी की सहायता से घूमने-फिरने रहने और सब कुछ करने का मौका देने जा रही हैं।

इस काल्पनिक दुनिया में हमें यदि जीने की चाह होगी तो हमें अपनी जगह उन कंपनियों से खरीदनी पड़ेगी और वह भी क्रिप्टो करेन्सी में ही। इन काल्पनिक दुनिया में प्रवेश करने हेतु हमें कम्प्यूटर, स्मार्टफोन के अलावा नूतन तकनीक से लैस वायरलेस हेडसेट की आवश्यकता पड़ेगी। जिसमें वर्चुअल रियलिटी, ओगमेन्टेड रियलिटी और मिक्सड रियलिटी की जरूरत पड़ेगी। वर्तमान में उपलब्ध सारे कम्प्यूटरों में से 90 प्रतिशत कम्प्यूटर ऐसी वर्चुअल रियलिटी के सोफ्टवेयर को हेण्डल करने में समर्थ नहीं है। अभी वीडियों गेम खेलने के लिए जो हेडसेट यूज होते हैं वो भी मेटावर्स के लिए निकम्मे होंगे। 'मेटावर्स' की वर्चुअल रियलिटी के लिए जो हेडसेट अभी मिल रहा है, उसकी कीमत ही 60,000 रूपये जितनी है (पहले स्मार्ट फोन आम जनता के लिए पहुँच से बाहर था, मगर अब सबके हाथ में तकरीबन आ चुका है, ठीक वैसे ही... आने वाले समय में... यहाँ पर लिखी बातें सच हो सकती है।) आज ऑनलाइन व्यापार का इतना विस्तार हो चुका है कि, अच्छे-अच्छे व्यापारियों को अपनी वेबसाईट खरीदनी पड़ रही है या किराये पर लेनी पड़ती है। अपनी एप्प बनानी पड़ रही है, जिसकी उन्होंने आज से 10 साल पहले कल्पना भी नहीं की थी। कुछ लोग ऐसा सोचते हो कि, हम 'मेटा' के प्लेटफार्म पर जायेंगे ही नहीं तो क्या प्रोब्लम होगी?

दरअसल, नीति निर्माता और नीति मार्गदर्शक मिलकर ऐसा काम करते हैं कि, जो हमें करने की बिल्कुल इच्छा ना हो तो भी वो करना ही पड़े। अपने बच्चों के हाथों में मोबाईल ना देने की इच्छा कहाँ पूरी हुई? मजबूरन अभिभावकों को ऑनलाइन शिक्षा के लिए देना ही पड़ा ना? ऐसी तो लाखों मजबूरियाँ एवं पाबंदियाँ खड़ी की जा रही है। वे लोग दूसरे द्वारों को बंद कर हमें एक ही द्वार से जाने के लिए मजबूर करते हैं।

Religion is opium for mass (धर्म बहुजन लोगों के लिए नशाकारक गांजा है) ऐसा विधान करने वाले नास्तिक शिरोमणि कार्ल मार्क्स, हकीकत में भ्रांत एवं भटके हुए थे। बोलना ही हो तो अब ऐसा बोलना चाहिए... 'Mobile is opium for mass... Meta verse is opium for mass.'

जब इन्सान को कंगाल कर दिया जाता है, तब अपना दुःख, अपनी पीड़ा भुलाने के लिए वो नशा करने लगता है, जिससे काल्पनिक दुनिया में जाकर वो वास्तविक दुनिया के दुःखों को भूल जाता है।

अफीम, ड्रग्स (गांजा), मारीजुआना को भी टक्कर मारने वाली नई नशाकारक चीज़ 'मेटा' होगी, जो दुनिया के लोगों के दुःख मिटाने का नहीं, उन दुःखियों को ही मिटाने का काम करेगी।

जो पल भर के लिए ही दुःख भुल जाना चाहता है,

वो जीवन भर के लिए दुःखों को आमंत्रित करता है और जो दुःखों के सामने पल भर के लिए संघर्ष करना सीखते हैं, वो जीवन भर सुखों को आमंत्रित कर पाते हैं।

- भूखे लोगों के पास, भोजन नहीं है तो ईलाज होगा 'मेटा'
- गरीबों के पास, पैसे नहीं है तो ईलाज होगा 'मेटा'
- वासना के भेडियों के पास विजातीय पात्र नहीं है तो ईलाज होगा 'मेटा',

'मेटा' एक अंतहीन दुनिया है, जिसमें घुसना आसान होगा मगर निकलना भारी मुश्किल... शायद असंभव...,

इसीलिए तो 'मेटा' का सिम्बल अनंत (infinite) का ळ बनाया गया है। जैसे कुछ सीक्रेट सोसायटी में प्रवेश है, मगर वहाँ से निकलना असंभव है..... आखिर मृत्यु ही एक मात्र रास्ता बचता है, ठीक वैसे ही 'मेटा' में घुसने वालों के लिए वास्तविक दुनिया में वापिस आना और एडजस्ट होना बहुत ही टेढ़ी खीर होगी।

कई सारे दुष्ट प्रकृति के लोगों को अपने दुश्मन के मारे जाने पर दुःख होता है, क्योंकि वो जब तक जिन्दा था, तब तक ही उसे तड़पता हुआ वो देख सकते थे। तब तक ही वो उसका बदला ले सकते थे। तब तक ही वो उसे दुःखी कर सकते थे, मगर उसके मरने के बाद दुष्ट प्रकृति वालों का भी सुख-चैन मर जाता है। जैसे आसक्ति (राग) ग्रस्त पुरुष का प्रिय पात्र मरने से रागी का सुख-चैन लुट जाता है, ठीक वैसे ही द्वेषग्रस्त इन्सान का दुश्मन मर जाने से द्वेषी का सुख-चैन खत्म हो जाता हैं।

'मेटा' दोनों की समस्याओं का समाधान लेकर आया है। वासनाग्रस्त इन्सान अनगिनत महिलाओं के साथ बलात्कार कर पायेगा और द्वेषग्रस्त इन्सान अनगिनत दुश्मनों को मारकर, फिर से जिंदा कर पायेगा ताकि वापिस उसे मौत के घाट उतार सके... (नरक योनि की तरह)

मरे हुए को जिंदा फील करना हो या जिंदे को मार डालना हो तो दोनों चीजें कल्पना से संभव है और 'मेटा' की दुनिया ही काल्पनिक है। कुछ कायर ऐसे भी है, जो जीते जी अपने दुश्मन को ललकार नहीं सकते या कुछ अंतर्मुखी ऐसे है जो अपने दिल में छिपे दुष्ट विचारों को साकार नहीं कर पाते वो सब लोग इस प्लेटफार्म पर मनचाहा कर पायेंगे।

'Blue Whale' या 'PubG' या 'Free Fire' जैसे गेम खेलने वालों की मानसिक स्थिति का जो बंटाधार होता है, होता देखा है, इससे भी कई गुना ज्यादा खतरनाक नुकसान 'मेटा' से होगा।

हम जब छोटे थे, तब 'छोटा चेतन' नाम की पिक्चर देखने के लिए सिनेमा हॉल में गये थे और वहाँ पर हमें स्पेशल चश्मे दिये गये थे। उसे पहने बिना वो पिक्चर बराबर से देख ही नहीं पाते थे और वो चश्मा लगाने पर हमें वो अनुभव होता था कि, जैसे हम ही स्वयं पिक्चर के अंदर घुस गये हो... कभी, कोई-कोई दृश्यों में तो इतनी ज्यादा नजदीकी फील होती थी कि हमारी आजु-बाजु की दुनिया भी हम भूल जाते थे।

एक छोटा सा चश्मा पहनने पर यह अनुभूति हो सकती है, तो 'मेटा' तो बहुत बड़ा प्लेटफार्म है।

कुमारपाल महाराजा को भ्रमित करने के लिए देवबोधि ब्राह्मण ने उनके 7 पीढ़ी के पुरखों को (जो मर चुके थे) जीवित दिखाया, ना सिर्फ जीवित दिखाया, बल्कि उनसे बुलवाया भी सही कि, 'कुमारपाल! शैव धर्म ही सच्चा धर्म है, तू महादेव जी को कभी मत छोड़ना।'

यह सुनकर कुमारपाल महाराजा जैसे सुश्रावक भी भ्रमित हो गये, भौंचक्के रह गये तब कलि-काल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्यजी ने कुमारपाल महाराजा के सामने, उनकी 21 पीढ़ी के पुरखों को (जो मर चुके थे) जीवित करके दिखाया, इतना ही नही, उनसे कहलवाया कि 'कुमारपाल! तू कभी भी जैनधर्म को मत छोड़ना, सच्चे वीतरागी ऐसे महावीर को ही पकड़कर रखना।',

इतिहास गवाह है कि, जिस कारण से कुमारपाल महाराजा विचलित हो उठे थे, उसी के विपरीत प्रयोग से वापिस कुमारपाल महाराजा भी स्थिर हो गये। यानी 'मेटा' कोई नई तकनीक नहीं है, महा-पुरुषों के द्वारा आज से तकरीबन 1000 साल पहले प्रयोग में लाई जा चुकी तकनीक है। तकनीक का कोई विरोध नहीं है, विरोध सिर्फ इस बात का ही है कि, यह तकनीक अब आम जनता के लिए खोली जा रही है। पात्रता-अपात्रता को देखे बिना ही सबको दी जानी है, उसी का विरोध है।

शास्त्र एवं शस्त्र हमेशा निष्पक्ष होते हैं मगर अपात्र के हाथ में दिया हुआ शास्त्र भी शस्त्र की तरह मारने का कार्य करता है और पात्र के हाथ में रहा शस्त्र (विद्या-जादुई करिश्मा इत्यादि) भी शास्त्र की तरह तारने का कार्य करता है।

हमारी मूल प्रकृति, चंचल, दुष्ट संस्कारों से ग्रसित, अच्छे निमित्तों से ज्यादा बुरे निमित्तों को ग्रहण करने वाली है, जिससे हमें यदि सब कुछ कर पाने की स्वतंत्रता मिल जाये तो हम अच्छा कम, बुरा ही ज्यादा करेंगे। 'मेटा' में कुछ भी करो, किसी की शर्म नहीं रखनी होगी क्योंकि, वो सामाजिक-वास्तविक दुनिया से दूरकी एक अजीब सी दुनिया होगी।

बिना भोजन करे आपको तृप्ति की डकार आयेगी।

बिना मैथुन किये भी आप का सत्त्व निचोड़ लिया जायेगा।

बिना स्टेज आप नाच सकेंगे और बिना माईक आप गा सकेंगे।

मोबाईल के अंदर 'गंदे दृश्य' देखकर ही संतुष्टि पाने वाले, 'मेटा' की तकनीक के माध्यम से वो सारी 'गंदी चीजें' करने का भी अनुभव कर पायेंगे, जो वो करना चाहते थे मगर कर नहीं पाते थे।

सन्-2011 में प्रकाशित उपन्यास 'रेडी प्लेयर वन' में मेटावर्स के भविष्य के बारे में पहले से ही बता

दिया है। नोवेल के लेखक ने सन् 2045 की परिस्थितियों का वर्णन किया था, जो कि इस प्रकार था, पूरा विश्व ऊर्जा के अद्वितिय संकट का सामना कर रहा है और जागतिक ताप से जूझ रहा है, जिसके चलते अनेक आर्थिक और सामाजिक समस्याएँ पैदा हो चुकी है, जिससे बचने के लिए लोग काल्पनिक दुनिया (वर्चुअल रियलिटी) की शरण में गये हैं।'

इसी उपन्यास में वर्णित दृश्य कथा के ऊपर बनी फिल्म सन् 2018 को रिलीज़ हुई थी। सिम्प्सन कार्टून (Adult Cartoon), जो कि फ्रीमेसन के टॉप लीडर्स के द्वारा चलाया जाता है और गुप्त संस्थाओं (सीक्रेट सोसायटीज़) के भविष्य के आयोजनों को कई साल पहले ही कार्टूनों के माध्यम से उजागर करते रहते हैं (इबोला, कोरोना, डोनाल्ड ट्रम्प, लेडी गागा इत्यादि की भविष्य-वाणी इसी प्लेटफार्म पर कई सालों पहले हो चुकी थी।), उन्होंने भी मेटावर्स का जिक्र कुछ साल पहले कर दिया था। फेसबुक सन् 2014 से 'मेटा' के ऊपर काम कर रहा था, जिसके लिए उन्होंने वर्चुअल रियलिटी कंपनी ऑक्युलस को खरीद लिया है। मार्क जुकरबर्ग ने मेटावर्स के लिए यूरोप के हाई क्वालिफाईड 10,000 सॉफ्टवेयर इंजी-नियर्स को नौकरी पर रखने का एलान किया है।

'मेटा' की सबसे खतरनाक पहली बात यह होगी कि, जब आँखों में गांधारी की तरह पट्टी बाँधकर कोई इन्सान काल्पनिक दुनिया कौ मौज मारता होगा, तब वास्तविक दुनियां में उनके प्रति अपराध (क्राइम) को अंजाम देना बहुत ही आसान होगा।

जैसे कि, उसके घर की वास्तविक चीजें चुरा लेना। उनके परिवार के बाकी सदस्यों की अस्मत लूटना। या फिर उनकी जान ले लेना जो मेटा में खो गया है।

'मेटा' की सबसे खतरनाक दूसरी बात यह होगी कि इस माध्यम का उपयोग करने वालों की सारी प्राईवेट बातें, सारी कमजोर कड़ियाँ, अंदर की बातें उन लोगों के हाथों में चली जायेगी, जो लोग पूरी दुनिया को कठपुतली का खेल का हिस्सा मान रहे हैं और भविष्य में पूरी दुनिया के लोगों को कठपुतलीयाँ बनाना चाह रहे हैं। और 'मेटा' की तीसरी खतरनाक बात, इस 'मेटा' से क्रिप्टो करेंसी को असीम वेग मिलेगा। लोग अपनी असली करेंसी गँवा देंगे।

मेटा के माध्यम से झूंठी आज़ादी का एहसास करने वाले सब से बड़े गुलाम होंगे।

पायलट गायब है और इस हवाई जहाज का संचालन अब उन बंदरों के हाथों में है, जो नशा करके बैठे हैं।

अब तो भगवान ही रखवाला है इस दुनिया का...

पिया, पर-घर मत जाओ रे...

प्रियम्

पूज्य चिदानंद जी महाराज रचित प्रथम अध्यात्म-पद परिशीलन

स्व में समा जाने का स्वर्णिम अवसर

प्रश्न के प्रश्न का प्रश्न

परिणति होगी या नहीं,
वास्तव में यह प्रश्न है ही नहीं,
परिणति तो प्रत्येक समय में हो ही रही है।
वास्तव में प्रश्न यह है,
कि कौन-सी परिणति हो रही है?
स्व परिणति, या पर परिणति?
यदि स्व परिणति हो रही है, तो शाश्वत पद हाथ में ही है।
यदि पर परिणति हो रही है, तो खेल खत्म!
जो जीवन और मृत्यु का प्रश्न होना चाहिए,
उसके बारे में तो हमें प्रश्न ही नहीं होता है।
यही हमारा सर्वोत्कृष्ट दुर्भाग्य है।
वास्तव में तो यह एक जीवन-मृत्यु का प्रश्न नहीं है,
बल्कि अनंत जीवन-अनंत मृत्यु का प्रश्न है।
सद्गुरु की करुणा यहाँ पर दो कार्य कर रही है।
एक, प्रश्न जगा रही है,
और दूसरे, उत्तर की प्राप्ति करा रही है।
सद्गुरु का यह प्रयास है -
आपको खुद के भीतर वापस लाने का,
उन्होंने तो कोई कमी नहीं छोड़ी है।
चलिए, पकड़ते हैं सद्गुरु की उंगली।
हम भी कोई कमी नहीं रखेंगे
आत्म परिणति के पंथ पर।

सीधे अंदर

सुमता कुमता

पू. चिदानंद जी महाराज
प्रथम अध्यात्म पद में
आत्मा के दो पहलुओं के बारे में संकेत करते हैं। सुमता और कुमता।
मोक्ष हेतु मार्गानुसारी क्षयोपशम का पर्याय सुमता है, और
भाव हेतु मार्ग विरुद्ध कदाग्रह, कुमता है।
सद्बुद्धि सुमता है, और दुर्बुद्धि कुमता।
सुमता, आत्मा को विनती करती है,
पर-परिणति से वापस लौटने की, और स्व-परिणति में डूब जाने की।
कुमता की बात उल्टी है।
सुमता हृदय के उद्गारों के साथ
पर-परिणति में प्रवेश करने के दुष्परिणाम समझाती है।
'पर' का कोई प्रयोजन ही नहीं है।
यह सत्य का पर्दाफाश करती है।
आत्मा मंत्रमुग्ध होकर सुनती रहती है,
और उसके बाद क्या होता है...?
थोड़ा परिशीलन के लिए बाकी रखते हैं।
चलिए अब सीधे पद के भीतर जाते हैं।
आत्म परिणति हमारी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही है।

प्रथम पद

पिया[1], पर-घर मत जाओ रे,
करी करुणा महाराज।

कुल मरजादा लोप के रे, जे जन पर घर जाय;
तिणकु उभय लोक सुण प्यारे, रंचक[2] शोभा नाय। .०१

कुमता संगे तुम रहे रे, आगे काळ अनाद;
तामे मोह[3] दीखावहू[4] प्यारे, कहा निकाल्यो स्वाद? .०२

लगत[5] पिया कह्यो माहरो रे, अशुभ तुम्हारे चित्त;
पण मोथी[6] न रहाय पिया रे, कहा बिना सुण मित्त। .०३

घर अपने वालम कहो रे, कोण वस्तु की खोट;
फोगट तद किम लीजिये प्यारे, शीश भरम की पोट। .०४

सुनी सुमता की विनती रे, चिदानंद महाराज;
कुमता नेह निवार के प्यारे, लीनो शिवपुर राज। .०५

1. प्रिय
2. लेश-मात्र
3. मुझे
4. दिखाओ
5. लगता है
6. मुझसे

पिया[7], पर-घर मत जाओ रे,
करी करुणा महाराज।
कुल मरजादा लोप के रे, जे जन पर घर जाय;
तिणकु उभय लोक सुण प्यारे, रंचक[8] शोभा नाय। ...01

शुद्ध स्वरूपात्मक आत्मचेतना आत्मा से कहती है कि,
हे प्रिय! हे महाराज! आप करुणा करके पर-घर में मत जाइए।
जो कुल मर्यादा का लोप करके पर-घर में जाता है,
उसकी उभयलोक में कोई शोभा नहीं होती है। ॥1॥

हमारे यहाँ कुल की उच्चता या नीचता का आधार चारित्र होता था। दृढ़ चारित्र वाले उच्चकुल के, तथा हीन चारित्र वाले नीचकुल के माने जाते थे। नीचकुल की नारी दूसरे के साथ सम्बन्ध रखती थी, दूसरे के घर जाकर बैठ जाती थी। बस, पति बदल जाता था।

धिग् ब्राह्मणी-मृते पत्यौ, या जीवनि मृता इव।
धन्यां शूद्रीमहं मन्ये, पतिलक्षेऽप्यनिन्दिता॥

धिक्कार है उस ब्राह्मणी को, जो पति की मृत्यु के बाद मुर्दे की तरह जीती है। मुझे तो शूद्री ही धन्य लगती है, जिसके लाख पति होने पर भी वह निंदनीय नहीं बनती।

ऐसा प्राचीन श्लोक देखने को मिलता है, जिसका सार यह है कि नातरा करे, वह नीच। दूसरे के घर पर जाकर बैठ जाना, अर्थात् नातरा करना। आत्मा जब स्वद्रव्य-रूप अपना घर छोड़कर परद्रव्य-रूप दूसरे के घर को अपनाती है, तब वह वास्तव में नातरा करने की ही घटना होती है।

परभावगमन, नैश्चयिक नीच गोत्र का उदय है। परपरिणति गमन, नैश्चयिक व्यभिचार है।

पिया पर घर मत जाओ रे

पू. चिदानंद जी महाराज सरलतम शब्दों में गहन-तम बात कर रहे हैं।

7. प्रिय
8. लेश-मात्र

कुल मरजादा लोप के, जे जन परघर जाय

तेरा कुल कौन-सा है? अनंत सिद्धों का जो कुल है, वही तेरा भी कुल है। उसकी मर्यादा है - अविरत स्वद्रव्यमात्र परिणति। उसका लोप, यानि परद्रव्य परिणति। याद आती है वह आनंदघनीय लय...

जात आनंदघन

शुद्धात्मा की जाति और उसका कुल और क्या हो सकता है, सिवाय आनंदघन के।

गाभ आनंदघन

उसकी लाज, उसकी मर्यादा वह भी आनंदघन ही है।

कुलकरों ने मर्यादालोप में हाकार, माकार और धिक्कार नीति लागू की थी। भरत चक्रवर्ती ने साम, दाम, दंड और भेद की नीति लागू की थी। आत्मा जब मर्यादा का लोप करती है, तब वह भेदनीति की भोग बन जाती है। जहाँ स्वरुप का भेद हो जाए, जहाँ आत्मा, आत्मा के रुप से मिट जाती है। शुद्ध पानी ही पानी होता है, गटर के पानी को पानी कैसे कह सकते हैं? पीने के, नहाने के, धोने के लिए जो पानी किसी भी काम का नहीं है, उसे पानी कैसे कह सकते हैं? अनंत ज्ञान, अनंत दृष्टि, अनंत शक्ति - यह आत्मा का काम है। ऐसी आत्मा का कोई भी काम जो नहीं कर सकता, उसे आत्मा कैसे कह सकते हैं?

पर परिणति का सीधा अर्थ है - पर रुप में परिण-मन होना। स्वत्व से भ्रष्ट हुए बिना यह संभव ही नहीं है। इसीलिए महोपाध्याय श्री यशोविजय जी महाराजा ज्ञानसार में कहते हैं, 'स्वद्रव्यगुणपर्याय चर्या - वर्या पराऽन्यथा।'

स्वद्रव्य, स्वगुण और स्वपर्याय में रमण करना ही अच्छा है। परद्रव्य, परगुण और परपर्याय में रमण करना अच्छा नहीं है।

तिनकुं उभय लोक सुण प्यारे, रंचक शोभा नाय

पर प्रवृत्ति में इहलोक और परलोक, दोनों ही बर्बाद हो जाते हैं। पूछिए अपने आप से, पूरे जीवन में स्वप्रवृत्ति की कितनी क्षण हैं? हम स्व में कब डूबे? पर से कब छूटे?

कुमता संगे तुम रहे रे, आगे काळ अनाद;
तामे मोह[9] दीखावहू[10] प्यारे, कहा निकाल्यो स्वाद? ...02

कुमता के संग आप अनादि काल तक रहे।
उसमें क्या स्वाद आया? मुझे दिखाएँगे? ॥2॥

हमने पूरे भवचक्र में "पर" नामक बैल को दोहने का ही धंधा किया है, पर दूध की एक बूंद भी अब तक हमें नहीं मिली। तो अब कब तक उस बैल को दोहते रहने का हम निरर्थक प्रयास करते रहेंगे? पू. चिदानंद जी का यही आशय है।

कुमता का अर्थ है - दुर्बुद्धि, कदाग्रह। बैल को ही दोहना है - ऐसा असद्भिनिवेश। पर से ही सुख प्राप्त करने का आग्रह। सुख का आग्रह रखना ठीक है, किंतु सुख के स्रोत के प्रकार का आग्रह रखना सही नहीं है। जहाँ प्रकार का आग्रह आता है, वहाँ सुख का आग्रह छूट जाता है। वहाँ यह भूमिका आ जाती है, कि यदि इस प्रकार से सुख मिलता हो, तो ही चाहिए। "इसी प्रकार से," वर्ना नहीं चाहिये। हकीकत में तो यहाँ न तो सुख का आग्रह है, और न ही प्रकार का आग्रह, यहाँ मात्र मूर्खता का आग्रह है।

उसमें भी, जब वह 'प्रकार' सही मायनो में 'प्रकार' ही न हो, तब वह मूर्खता अपनी सारी सीमायें पार कर जाती हैं। जैसे - 'मुझे तो रेत में से ही तेल चाहिये।'

कुमता; रेत पीलने का मशीन मिल जाए, उसे चलाने वाला आदमी भी मिल जाए, वह मशीन बराबर चल भी जाए - ये सारे आग्रह ही गलत हैं, क्योंकि शायद ये सब कुछ हो भी जाए, तो भी आखिर में तेल तो मिलने वाला है ही नहीं।

पू. चिदानंदजी महाराज कहते हैं:

कहा निकाल्यो स्वाद

आप अनादिकाल से इस मशीन में रेत पील रहे हो। आपको तेल की एक बूंद भी मिली हो, तो बताओ। अभी भी आपको उसकी आशा है?

9. मुझे
10. दिखाओ

गोडीजी का इतिहास - 5

पूज्य मुनिराज श्री धनंजय विजयजी म.सा.

पारस प्रभु मेरे...

मेघाशा हर्षित हृदय से भूदेशर की सीमा पर पहुँचा। अपनी कर्मभूमि के सामीप्य से उसका मन प्रसन्न हो गया।

उसने अपने साले काजलशा को खुद के आने का समाचार भेजा और कामदार काजलशा भी अपने स्नेही-स्वजनों को लेकर विशाल समुदाय के साथ मेघाशा के स्वागत के लिए सामने गया और आडंबर से सामैया किया।

मेघाशा ने घर आकर प्रभुजी की प्रतिमा को उचित स्थान पर विराजित किया। पूरे गाँव में प्रभु के पधारने की खबर महक की तरह फैल गई। प्रभुजी के दर्शन-पूजा करने के लिए लोगों के झुंड के झुंड श्रद्धा के साथ उमड़ने लगे।

प्रभु के दर्शन से आनंदित होकर लोग प्रभु के अचिंत्य प्रभाव की बातें करने लगे, और यह बात कर्णोपकर्ण सीधे राजा तक पहुँच गई। राजा खेंगार भी प्रभु के दर्शन के लिए आतुर हुआ और प्रभुदर्शन करने हेतु आया।

जब प्रभु के साक्षात् दर्शन हुए, तब राजा के मुँह से शब्द निकल पड़े,

"धन्य हुई धरा मेरी, कि आज इन प्रभु के कदम मेरे राज्य में पड़े, मेरा अहोभाग्य है कि, अब मुझे बार-बार प्रभु की भक्ति का अवसर प्राप्त होगा।" इस प्रकार प्रभु के गुण गाकर राजा अपने महल में पहुँचा।

इस तरफ कुछ दिन व्यतीत हो जाने पर काजलशा का मन अब व्यापार की जानकारी लेने के लिए अधीर हुआ। उसने मेघाशा से पूछा, "क्या है हिसाब

-किताब? क्या कमाया? क्या खर्च किया?"

नेकदिल और प्रामाणिकता की साक्षात् मूर्ति समान मेघाशा ने सारा हिसाब पूरी नीति के साथ बता दिया। उसमें 500 टके* ("टके" उस समय का उस देश की मुद्रा) प्रतिमा के बताये। तब काजलशा ने कहा, "अरे! क्या आप भी? यह क्या किया? एक पत्थर के टुकड़े के लिए इतने दे दिये? मुझे इससे क्या फायदा? इससे अच्छा तो कोई वस्तु ले आते तो कुछ तो उपज होती?"

यह सुनते ही मेघाशा ने उग्रता से कहा, "अब एक शब्द भी मत बोलना। एक श्रावक होने पर भी आप प्रतिमा को पत्थर का टुकड़ा कहते हैं? रहने दीजिए। ये 500 टके मेरे हिस्से में लिख देता हूँ। अब से आपका इसमें हिस्सा नहीं है। आज से यह पार्श्वनाथ प्रभु मेरे हैं।"

काजलशा काजल जैसा श्याम मुख लेकर विदा हुए, और मेघाशा ने घनराज नामक अपने एक संबंधी को प्रभुजी की सेवा-भक्ति आदि के कार्य सौंप दिए। संपूर्ण परिवार प्रभुभक्ति के अद्भुत आनंद का आस्वाद लेने लगा।

नदियों के प्रवाह की तरह समय बीता, और कालक्रम से मेघाशा को उसकी पत्नी मृगादेवी से (1) महियो (2) मेरो नामक दो पुत्ररत्नों की प्राप्ति हुई।

छोटे-छोटे बालकों को लेकर परिवार के साथ श्री पार्श्वनाथ प्रभु की भक्ति करते करते 12 वर्ष बीत गए।

एक दिन ऐसी घटना घटी कि मेघाशा गाँव छोड़-कर चले गए।

ऐसा क्या हुआ? जानने के लिए आगे पढ़िये...

* 125 टके

'गोडी' नाम का रहस्य

वि.सं.1482, ई.स.1426 का वर्ष था। दिन भर के कार्यों को निपटाकर मेघाशा अब निद्रादेवी की गोद में विश्राम कर रहे थे। प्रातःकाल के समय में स्वप्न में दिव्य मुकुट, कुंडल और हार से शोभायमान तेज से जगमगाते हुए यक्ष खेतलवीर के दर्शन हुए। उस समय ऐसे लगा जैसे कि दसों दिशाओं तेज पुंज से प्रकाशित हो गई हो।

मेघाशा ने वीर को स्वप्न में नमस्कार किया। खेतलवीर यक्ष ने मेघाशा को कहा, "सुनो! इस

पारकर देश का नजदीक के समय में भंग होने वाला है। इसलिए कल प्रातःकाल में प्राभातिक कार्य पूर्ण करके भावड़ नामक चारण से वेल (ऊपर के छत्र सहित गाड़ी) लेना, और देवाणंद (जो मेघाशा का साढू था) से दो छोटे बैल लेना। फिर इस बैलगाड़ी में प्रभु को विराजित करके तू स्वयं इस गाड़े को चलाना। गाड़े को थलवाड़ी* गाँव की ओर ले जाना, और पीछे मुड़कर मत देखना।"

इतना आदेश देकर यक्ष अंतर्ध्यान हो गया। मेघाशा ने भी प्राभातिक कार्यों को पूर्ण करके वीर के वचनानुसार गाड़े और बैलों को जोड़ दिया और प्रभुजी को पधराया। गाँव के लोगों ने भारी हृदय से प्रभु को विदा किया।

मेघाशा ने स्वयं वृषभरथ चलाया, और एक के बाद एक गाँव को पार करते हुए, आगे बढ़ते हुए मार्ग में एक भयानक जंगल आया। मेघाशा ने सोचा, **"यह भयानक जंगल किस तरह पार कर पाऊँगा? यहाँ पर तो जंगली और शिकारी पशुओं का बहुत उपद्रव है।"**

उसे इस तरह चिंतातुर देखकर खेतलवीर यक्ष ने पार्श्वप्रभु की महिमा गाकर उसे निश्चिंत किया। मेघाशा ने दृढ़ता से जंगल पार किया और एक वीरान गाँव तक पहुँचा।

हिम्मत और साहस के साथ भयानक जंगल पार करने वाले मेघाशा के मन में इस गाँव के आते ही एक कमजोर विचार आया कि, 'यह गाड़ा एकदम हल्का-फुल्का क्यों लग रहा है? मेरे वृषभरथ में प्रभुजी विराजित तो हैं ना?'

चिंतित होकर मेघाशा ने जैसे पीछे मुड़कर देखा, तो उसी समय बैलगाड़ी वहीं के वहीं थम गई। मेघाशा को अपनी गलती समझ आई और उसे बहुत पछतावा हुआ। उसने गाड़ी को आगे बढ़ाने का अथाग प्रयत्न किया, पर वह निष्फल रहा।

मेघाशा के मन में निरंतर इस बात की चिंता होने लगी कि

1. **यहाँ पर जिनालय के निर्माण के लिये पत्थर कहाँ से लाऊँगा?**
2. **तीर्थ सदृश जिनालय के लिए इतनी संपत्ति कहाँ से लाऊँगा?**
3. **यहाँ पर तो खारा जल है, तो यात्रियों के लिये मीठा जल कहाँ से लाऊँगा?**

मेघाशा श्रमित था, रात्रि भी होने को थी, अतः वह निद्राधीन हो गया। स्वप्न में यक्ष ने दर्शन दिए और आश्वासन देकर मार्ग बताया, "हे श्राद्धवर्य! यह गोड़ीपुर गाँव है। यहाँ से दक्षिण दिशा में थोड़ी दूरी पर ताजा गोबर पड़ा होगा, वहाँ पर कुआँ खुदवाना। तुझे पानी और पाषाण की प्राप्ति की होगी। और उसके नजदीक में श्वेतार्क (सफेद आंकड़े का पेड़) है। उसके नीचे बहुत सारा धन है। उससे जिनालय का निर्माण करना, और जहाँ पर चावल का साथिया किया गया है, उस भूमि पर जिनालय निर्माण करना।"

देववाणी सुनकर खुश-खुशहाल होकर मेघाशा उठ गया। उस वीरान गाँव को आबाद करने के लिए उसने सगे-स्वजनों को वहाँ बुलाया और वहीं उनका स्थाई निवास कराया।

गोड़ी गाँव के अधिपति परमार जाति के सोढ़ा राजपूत उदयपाल थे। उसका खेतलसिंह लुणोत

*** बाड़ा स्थल याँ बोड़ाथल नाम का उल्लेख भी कहीं पर प्राप्त होता है।**

नामक कर्मचारी था जो स्वभाव से भद्रिक था। उसे समाचार मिला कि भूदेशर से मेघाशा प्रभुजी को लेकर पधारे हैं, तो वह राजा उदयपाल को साथ लेकर वहाँ दर्शनार्थ आया। प्रभु को नमन-वंदन करके रोमांचित होकर राजा ने मेघाशा के साथ बात की। मेघाशा अथ से इति तक की सारी चमत्कारी घटनाएँ बताईं और खेतलवीर ने स्वप्न में जो बताया वे बातें भी बताईं।

प्रसन्न हृदय से राजा ने भी पानी-पाषाण लेने की अनुमति प्रदान की, और 40 बीघा जमीन का लेख बनाकर भेट दिया।

प्रभु का चमत्कार पर चमत्कार अनुभव कर रहे मेघाशा ने दैवी संकेत के अनुसार भूमि संपादन करके कुआँ खुदवाना प्रारंभ किया। जगह-जगह पर खारे पानी के कुएँ होने पर भी प्रभु के प्रभाव से इस कुएँ में से मीठा पानी निकला।

उधर खान में से पत्थर निकालने का काम भी जोर-शोर से चल रहा था।

किन्तु...

सभी कारीगर शिल्पी नहीं थे। जिनालय निर्माण के लिए शिल्पशास्त्र के विशेषज्ञ चाहिये होते है। इतने दूर-सुदूर प्रदेश में शिल्पी कहाँ से लाएँ?

मेघाशा चिंतित था। किन्तु उसकी चिंता दूर करने के लिए रात्रि में स्वप्न में आकर यक्ष खेतलवीर ने कहा, "क्यों चिंता कर रहा है मेघाशा! तू सिरोही (राजस्थान) जा। वहाँ एक चतुर और विद्वान शिल्पी है। उसे असाध्य कुष्ठ रोग हुआ है। तू श्री पार्श्वनाथ प्रभु का न्हवणजल लेकर जाना। उसके मस्तक पर उसका छिड़काव करना। उसका कुष्ठ रोग मिट जाएगा।

रोग की पीड़ा से मुक्त होते ही वह तुझसे सेवा और

ऋणमुक्ति की प्रार्थना करेगा, तब तू जिनालय निर्माण की बात करना।"

प्रभात होते ही मेघाशा ने अपनी धर्मपत्नी को सारी बात बताई और रजत कुंभ में न्हवण जल लेकर सिरोही पहुँचा। वहाँ शिल्पी को यक्ष के वचन सुनाकर उसके मस्तक पर न्हवणजल का छिड़-काव किया।

प्रभु पार्श्वनाथ के प्रभाव से शिल्पी संपूर्णतया रोगमुक्त हो गया। मेघाशा ने इस ऋणमुक्ति के लिए उसे जिनालय निर्माण की बात बतायी। शिल्पी अत्यंत आनंद के साथ गौरव का अनुभव करते हुए बोला, "मैं धन्य हूँ! पुण्यशाली हूँ कि ऐसे प्रभु का जिनालय बनाने का अवसर मुझे मिलेगा।"

मेघाशा शिल्पी सलाटों को लेकर गोड़ी गाँव में लौटा। जिनालय के निर्माण के कार्य का प्रारंभ हुआ।

पत्थर पर गूंज रहे टंकार की आवाज ऐसी लग रही थी जैसे कि सुंदर संगीत फैल रहा हो। राजा उदयपाल ने भी रक्षा के लिए अपने सैनिक लगा दिए। जिनालय के हो रहे निर्माण को देखकर मेघाशा का मनमयूर नाच रहा था।

"शीघ्र शिखर का निर्माण हो जाए, और मैं स्वर्ण कलश चढ़ाऊँ।" ऐसे शुभ मनोरथ का मन ही मन चिंतन करते हुए वह कल्पना में गुम हो गया।

पर कहते हैं ना कि, "अच्छे काम में सौ विघ्न!"

क्या पता कि जिनालय का काम कब और कैसे संपन्न होगा।

मेघाशा तो ऊँचे-ऊँचे स्वप्न देख रहा था, पर भवितव्यता कुछ अलग ही थी।

जिनालय का कार्य अभी आधा ही हुआ था और तब ...

आगे क्या होता है, वह आने वाले अंक में...

साधक का अलंकार

पूज्य मुनिराज श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

Hello friends,

आज बात की शुरुआत एक कहानी से करते हैं।

रास्ते से दो लड़के गुजर रहे थे। बारिश का मौसम था। बीच रास्ते बारिश गिरनी शुरु हुई, और थोड़ी ही देर में तो इतनी जोर से गिरने लगी, कि चलना मुश्किल हो गया।

दोनों ने रास्ते के किनारे पर स्थित एक छपरे का सहारा लिया। उस लोहे के छप्पर के नीचे जाकर वे खड़े हो गये। तेज बरसात थी इसलिए छपरे की बहुत तेज आवाज आ रही थी।

पहला युवक बोला, "ओह शिट! मैं तो तंग आ गया इसके शोर से, सुन-सुन कर मेरे तो कान फट गये। कितना आवाज कर रहा है यह छपरा?"

दूसरा मुस्कुराया और बोला, "दोस्त मेरे! बुरा मत सोच। उल्टा ऐसा सोच कि सिर पर यह छत है इसलिए बरसात से सुरक्षा मिल रही है। भले ही यह आवाज कर रहा है, पर हमारे ऊपर गिरने वाली मुसीबतों को खुद पर झेल रहा है, इस वजह से इतनी आवाज हो रही है। यह छपरा तो उपकारी है भैया!"

आज हम तीर्थंकर प्रभु बनने के 17वें सोपान पर खड़े हैं। इस पद का नाम है **संयम पद।**

संयम, यानी एक ऐसी बोर्डर लाइन, एक ऐसी सीमा रेखा जिसे हमारे बुजुर्गों ने, हमारे पुरखों ने, हमारी संस्कृति ने, हमारे धर्म ने, हमारे धर्मगुरुओं ने, हमारे माँ-बाप ने, हमारे लिये खींच कर रखी है। यदि आदमी स्वयं ही समझदारी दिखाकर संयम में रहे, तो वह आपत्तियों के तूफान से अपने आप ही बच जाता है।

परन्तु यदि वह उस रेखा से बाहर निकलने की कोशिश करता है, तो फिर तूफानों की झपट में आ जाना स्वाभाविक है।

अतः ऐसे में, जब वह सुरक्षित सीमा रेखा, यानी संयम से पैर बाहर रखने हेतु तत्पर होता है, तब उससे सच्चा प्रेम करने वाले उसके सच्चे हितैषी, मित्र, माँ-बाप, धर्मगुरु, बड़े-बुजुर्ग सब मना करने लगते हैं, चिल्लाने लगते हैं, रोकते हैं, पुकार लगाते हैं। वे हमारे सिर पर रही छत के समान है, हमें तकलीफों से बचाना उनका फर्ज है।

उनकी पुकार से किसी के कान पक जाते हैं, तो किसी के कान धन्य बन जाते हैं। दूसरे किस्म के युवक जैसे लोग कहते है कि, "माँ, पिताजी, गुरुजी! मैं आपका आभारी हूँ, कि आपने मुझे उस ओर जाते हुए चिल्लाकर भी रोक लिया।"

पर पहले वाले युवक की भाँति कोई ऐसा भी होता है जो अपने सुरक्षाकवच को फाड़कर बाहर निकलने में बड़ी होशियारी समझता है, और चिल्लाने वाले बड़ों को 'सिरदर्द' समझता है।

पर फिर भी उसके बड़े और उसके गुरु तो जरूर चिल्लायेंगे, जरूर रुकेंगे... कुछ हद तक वे भी उसके पीछे-पीछे बाहर निकलेंगे, ताकि उसको अंदर ला सकें। एक छोर पर वे रुक जायेंगे, पर चिल्लाते रहेंगे। जब तक उनकी आवाज़ सुनने के दायरे में वह रहा, तब तक वे प्रयत्न करेंगे।

आखिर जब वह हाथ से निकल जाता है, तब भी वे उसकी राह देखेंगे, क्योंकि बाहर निकलने वाला कभी ना कभी तो थकता ही है, लौटता है, मुड़ता है। और तब वे उसे थामकर वापिस घर ले आयेंगे।

इसीलिए अपने संयम में रहो, संयम को कभी मत छोड़ो। संयम आपका बंधन नहीं, सुरक्षाकवच है। चलिए, इसका गुणगान करें।

॥ संयम पद ॥

संयम पद

(ये तो सच है कि...)

जीवन का ये श्रृंगार है, साधक का अलंकार है;
संयम तो मेरी आतमा के मंगल का आधार है...

जो परम शक्तिशाली थे परमात्मा, उन्होंने भी संयम का पालन किया;
नहीं निर्बलता किन्तु सामर्थ्य है, मौन रहना ही होती बड़ी साधना;
जिससे कर्मों की फौजें हटे; और परमपद की खुशियाँ मिले...

निर्बल के संयम की प्रशंसा नहीं, शक्तिशाली के संयम को लाखों नमन;
देव भी चूमते संयमी के चरण, जिनका है हमेशा विराग में मन;
परमात्मा बना दे संयम, यदि थोड़ा धरें धैर्य हम...

कोई भोगी यहाँ, कोई रोगी यहाँ, कोई भाई से या चिन्ता से हैरान है;
सभी संयम रखें, मन शांत बने, और काया के रोग भी ना रहते,
ये तो कुदरत का वरदान है, इससे मानव का कल्याण है...

पैसा याँ बुद्धि

पूज्य मुनिराज श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

एक बार टीचरने चिंटू को पूछा,
"बोल! 1) पैसा, और 2) बुद्धि, इन दोनों में से यदि तुझे कोई एक चीज पसंद करके लेनी हो, तो तू कौन सी चीज लेगा?"

चिंटू, "टीचर मैं तो पैसा लूँगा।"

टीचर ने कहा, "मैं होता, तो बुद्धि माँगता।"

चिंटू, "टीचर! आपकी बात बराबर है। जिसके पास जिस चीज की कमी, वह व्यक्ति वही चीज मांगता है।" टीचर का मुँह गुस्से से लाल हो गया, और चिंटू वहाँ से भाग गया।

बुद्धिशाली लोग सुखी होते हैं, पर उनके सुख के पीछे कोई जादू नहीं होता है, बल्कि वह सुख बुद्धि की ही देन होती है। बुद्धि होने के कारण ही बुद्धि-शाली लोग:

1. सभी निर्णय बहुत सोच समझकर और सही तरीके से करते हैं।
2. व्यर्थ बहस में समय बर्बाद नहीं करते।
3. ज्यादातर समय जीवन को ज्यादा जीवंत बनाने के लिए बिताते हैं।
4. गलत नीति-नियमों को पकड़कर नहीं रखते।
5. कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य रखकर रास्ता निकाल लेते हैं।
6. अपनी बुद्धि को सद्बुद्धि में रूपांतरित करने का प्रयत्न करते हैं।

मतलब यह, कि:

- दूसरों को निरंतर दुःख देते रहने के विचारों में व्यस्त रहने वाली बुद्धि, दुर्बुद्धि है।

- अपने सुख के लिए अविरत चिंतित विचारधारा, बुद्धि है, और
- अपनी आत्मा के हित, और दूसरों के सुख की चिंता करने वाली बुद्धि, सद्बुद्धि है।

महात्मा गाँधी एक बार प्रवास पर निकले हुए थे। रेल्वे स्टेशन पर बहुत भीड़ होने के कारण ट्रेन तक पहुँचने में देर हो गई, और ट्रेन शुरू हो गई। आखिर में ट्रेन पकड़ तो ली, पर पहली ही सीढ़ी पर पैर रखते ही उनके पैर से एक चप्पल निकल कर गिर गई। अब ट्रेन छोड़कर नीचे भी नहीं उतर सकते थे, और एक चप्पल पहनी हुई भी अजीब लग रही थी। एक क्षण के लिए गाँधीजी के दिमाग में कोई विचार आया, और उन्होंने तुरंत दूसरे पैर की चप्पल भी निकाल कर फेंक दी।

यह दृश्य देख रहे एक भाई को आश्चर्य हुआ, और उसने गाँधीजी से कारण पूछा।

गाँधीजी ने हँसते हुए कहा, "भाई! मेरी एक चप्पल गिर गई थी। मैं उतरकर उसे वापस तो नहीं ले सकता था। और बची हुई एक चप्पल मेरे किसी भी काम की भी नहीं थी। घर जाकर मुझे उसे फेंकनी ही थी। इसलिए मैंने मेरी मानवता भरी बुद्धि से तुरंत निर्णय लिया कि, यदि चप्पल बाद में फेंकनी ही है तो अभी क्यों ना फेंक दूँ? जिससे किसी गरीब इंसान को दोनों चप्पल इकट्ठे मिले, तो वह उसका उपयोग कर सके।

यह सुनकर वह भाई दंग रह गया।

अपने नुकसान से भी दूसरों का फायदा करवा दे, इसे सद्बुद्धि कहते हैं!

"श्रीमंत व्यक्ति अपने पैसों से बुद्धिशाली नहीं बन सकता है।
पर बुद्धिशाली व्यक्ति अपनी सद्बुद्धि से पैसों से और हृदय से अवश्य श्रीमंत बन सकता है।"

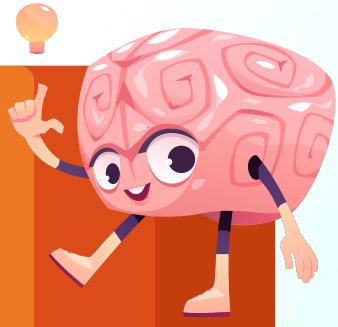

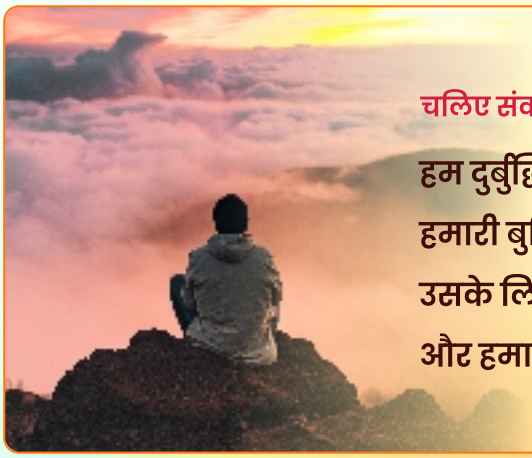

चलिए संकल्प करते हैं कि,

हम दुर्बुद्धि से दूर रहेंगे, और
हमारी बुद्धि को सद्बुद्धि में रूपांतरित करेंगे।
उसके लिए निःस्वार्थ भाव से दूसरों के सुख की,
और हमारी आत्मा के हित की चिंता करेंगे।

Temper : A Terror – 15

पूज्य मुनिराज श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

(मंत्री मित्रानंद अपने मित्र राजा को 50वां दिन होने पर भी कुछ समाचार नहीं भेज पा रहे हैं, क्योंकि वह फारस सेठ के वहां बंदी हो चुके हैं। और आगे क्या होता है पढ़ें...)

दुर्गंध मारते हुए शवों से भी ज्यादा गंदी दुर्गंध चारों ओर से आ रही थी। वर्षों पुराना कचरा, नए कचरे के साथ मिलकर एक अभिनव दुर्गंध उत्पन्न कर रहा था।

नाक पर 10 पड़ वाला कपड़ा पहनने पर भी उस दुर्गंधित कचरे की भयंकर दुर्गंध दूर रखने के लिए भाग रहा व्यक्ति समर्थ नहीं था। पर, इस बात की असर उस व्यक्ति पर नहीं हो रही थी। उसके नाक के ऊपर दिख रहे मुख पर आनंद छाया हो, ऐसा दिखाई दे रहा था।

नगर के द्वार वाले हिस्से को लांघकर वह व्यक्ति आगे बढ़ा। उसके पैर लगातार तेज गति से गटर के द्वार की तरफ जा रहे थे। 'धड़ाम' ऊपर से आवाज आई। दो एक क्षण के लिए दौड़ता हुआ व्यक्ति रुक गया।

'एक समस्या में से दूसरी समस्या में ना गिरूँ तो अच्छा है' उसके दिमाग में विचार आया। महा मुश्किलों से जैसे तैसे कितने पैंतरे करने के बाद यह व्यक्ति दासखाने से भागा था। अब वह वापिस फंसना नहीं चाहता था।

ऊपर से पैरों की आवाज सुनाई दी। उस व्यक्ति का मन सांझ के भूतकाल में खो गया। जहाज से दिख रहा बड़ा समुद्र उसकी आँखों के समक्ष आ गया।

"हे मित्रानंद! ज्यादा होशियारी मत दिखाना..." फारसी सेठ की आवाज सुनाई दी। "यहाँ से भागने का विचार भी किया, तो तेरी सूअर से भी ज्यादा

बुरी हालत कर दूँगा।" फारसी सेठ का बेरंगी मुख सामने आया।

ऊपर से चहल-पहल की आवाज सुनाई दी। चारों और विष्टा और मूत्र फैले हुए थे। मित्रानंद को फिर से गटर के अंदर जाने की स्फुरणा हुई, लेकिन उसके पैर वहीं थम गए। ऐसा मित्रानंद को लगा मानो एक अव्यक्त भय उसकी सारी शक्तियाँ हर रहा हो।

सामने से आ रहे किसी व्यक्ति की ओर मित्रानंद की दृष्टि पड़ी। वह वहीं अवाक् हो गया।

'मैं तुझे छोड़ूँगा नहीं, मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा।' अपने फारसी सेठ की चीखें मित्रानंद के मस्तिष्क में गूंजने लगीं।

सामने वाले व्यक्ति पर थोड़ा प्रकाश पड़ा। मित्रानंद को उसका पहनावा दिखाई दिया। मित्रानंद को दासखाने की यातनाएँ याद आ गईं।

मित्रानंद के तो छक्के छूट गए।

दिए की लौ के जितनी भी छोटी आशा रानी को दिखाई नहीं दे रही थी।

"राजन्! राज्यसभा तड़प रही है। आप ये शोक कितने दिन तक लेकर बैठे रहेंगे? आप ऐसा क्यों सोच रहे हैं कि मंत्री मित्रानंद मर गए हैं। क्या आप उनके कौशल्य को नहीं जानते?" रत्नमंजरी रानी ने अपना अंतिम प्रयास किया।

अपने प्रिय मित्र मित्रानंद मंत्री के कोई भी समाचार नहीं आने से निराशा की खाई में डूबे हुए राजा अमरदत्त के मुख पर कुछ-कुछ आश्वासन के भाव छलके।

"नहीं... नहीं...!! ऐसा अशुभ मत बोलो। मैं ऐसी किसी भी बात को नहीं मानता। पर मित्रानंद का क्या हुआ होगा?" रानी को राजा के मुख पर फिर से चिंता के बादल उमड़ते हुए दिखाई दिए। ये तूफान में बदल जाए, उसके पहले ही उसे शांत करने के लिए रानी, राजा के पास आई।

"देखिए राजन्! आप कर्म के गणित के जानकार हैं, सुज्ञ हैं। हमारे मंत्री का क्या हुआ है, यह तो हम

में से कोई भी नहीं जानता। पर एक व्यक्ति ऐसा है, जो यह सब जानता है।"

"कौन? कौन है वह?" राजा एकदम तत्पर दिखे।

किसी ने उसी समय राजद्वार खटखटाया। दोनों के मुख उस तरफ मुड़े। सामने उद्यान पालक दिखाई दिया। उसकी उपेक्षा करके राजा ने रानी से अपनी जिज्ञासा का समाधान करने वाले व्यक्ति का नाम बोलने का इशारा किया।

"तो राजन्! वे व्यक्ति अतिशय ज्ञानी गुरु हैं। दूसरा कोई भी व्यक्ति..." वाक्य पूर्ण हो उससे पहले ही उद्यान पालक माली आगे आया।

"महाराज! यही समाचार मैं आपको देने आया हूँ।"

"कौन से समाचार?" राजा ने आश्चर्य के साथ माली की ओर देखा।

"महाराजाधिराज! एक साधु महात्मा हमारे उद्यान में पधारे हैं। और उनके बारे में ऐसा सुना है कि, वे सब कुछ जानते हैं..." माली ने एकदम धीरे से अंतिम पंक्ति कही।

राजा के मुख पर एक अनोखी प्रसन्नता दिखाई दी। उन्होंने अपना हार निकालकर माली के गले में डाल दिया। माली के गले में वह हार ध्रुव के तारे की तरह चमकने लगा।

बांस की सली से भी पतले शरीर वाले सभी दास भूमि पर निश्चेत पड़े हुए थे। उनके शरीर को देखकर लग रहा था, मानो किसी ने उनका पूरा चैतन्य हर लिया हो।

जहाज के तूलक के नीचे के भंडक में सभी दासों को भेड़ बकरियों की तरह बांधकर बंद किया हुआ था। आधे दास तो उस भंडक की दुर्गंध और घुटन के कारण अचेत पड़े हुए थे।

एक तेजवंत मुख वाला दास करुणा से भरी दृष्टि से इन सभी पशु से भी निकृष्ट स्थिति में पड़े हुए दासों की ओर देख रहा था। 'ये सभी कब मुक्त होंगे? मैं कब छूटूँगा?' उसके दिमाग में एक के बाद एक विचार चल रहे थे। उस भंडक के कोने में वह अलग से बैठा हुआ था।

इस तेजवान चेहरे वाले दास ने बहुत सारे उपाय ढूंढने का प्रयास किया था। लेकिन फारसी सेठ के प्रकृष्ट प्रबंधों के कारण सब प्रयास निष्फल हो गए थे। फारसी सेठ अपने दासों को लेकर बहुत अधिक सजग था। एक भी दास भाग जाए, ऐसा फारसी सेठ को स्वीकार्य नहीं था।

'मित्रानंद! अभी नहीं तो कभी नहीं! तू ऐसे भी मरेगा और वैसे भी। बोल मित्रानंद! किस तरह मरना है? साहस दिखाकर या बिना साहस किए?' मित्रानंद दास ने चारों ओर फिर से 50 बार देखा। जहाज के भंडक में ऐसा कोई भी स्थान दिखाई नहीं दे रहा था, जहाँ से मित्रानंद को रस्ता मिल सके।

ऊपर से जहाज के चलने का संकेत देता हुआ भोंपू बजा।

'मित्रानंद। चल उठ...' अंतर से एक साहसिक पुरुष की आवाज प्रकट हुई। 'मित्रानंद! हे मित्रानंद...!'

दास मित्रानंद अपने स्थान से खड़ा हो गया। समुद्र की महाकाय लहरें जहाज के साथ टकरा रही थीं। मित्रानंद ने अपना नियंत्रण खो दिया, और वह भूमि पर नीचे गिर गया। एक दूसरी लहर आई, और भंडक में पानी आने लगा। चारों और सभी दास चिल्लाने लगे।

मित्रानंद ने जहाँ से पानी आ रहा था उस स्थान की ओर दृष्टि की। वही जगह मित्रानंद के लिए इस

नरक से गमन करने का स्थान था। वह बाकी दासों को लांघकर उस तरफ आगे बढ़ा।

रात का अंधेरा होने के कारण सभी के मुँह काले दिखाई दे रहे थे, इसलिए कोई किसी को पहचान सके ऐसी संभावना नहीं के बराबर थी।

उसने भंडक में कोई धारदार तीक्ष्ण चीज मिल जाए, इस हेतु इधर उधर दृष्टि दौड़ाई। भंडक के कोने में उसे एक चमकती हुई चीज दिखाई दी। वहां एक बड़ा छुरा पड़ा हुआ था। मित्रानंद ने छुरा हाथ में लिया और जोर से पानी के उद्गम स्थल पर प्रहार किया।

"अरे! कौन है भाई!" ऊपर के तूतक से किसी की आवाज आई और पैरों की आवाज सुनाई दी। 'करो या मरो' मित्रानंद ने दूसरा वार किया, और पानी का प्रवाह और तेजी से अंदर आने लगा। सभी दास चीखने चिल्लाने लगे। एक बड़ी सी लहर जोर से टकराई और भंडक का वह स्थान टूट गया।

ऐसा लगने लगा जैसे जहाज डूब रहा हो। मित्रानंद को उस पानी में अपना छुटकारा दिखाई दे रहा था, इसलिए वह उसी ओर जाने लगा। पीछे से उसके कंधे पर किसी ने हाथ रखा, और उसे पीछे खींचने लगा।

मित्रानंद ने पीछे मुड़कर देखा। उसे फारसी सेठ दिखाई दिया। और एक क्षण के लिए उसे लगा कि वह फिर से दासखाने का बंदी बन गया है। पर साहसिक शूरवीर योद्धा की आवाज अंतर्मन से आई, "अब नहीं..."

मित्रानंद ने फारसी सेठ के मुँह पर एक जोरदार मुक्का जड़ दिया। अपना संतुलन चूक जाने के कारण गालियाँ बड़बड़ाता हुआ शेठ पानी में डूबने लगा। मित्रानंद ने चैन की सांस ली।

मधुर स्वप्न से मित्रानंद को झंझोड़कर किसी ने बाहर निकाला। 'हे मूर्ख! तू कौन है? शहर की गटर से प्रवेश करने का प्रयास क्यों कर रहा है?' मित्रानंद ने आँखें खोली। सामने नगर के रक्षक चौकीदार दिखे। उनके चेहरे पर का क्रोध देखकर मित्रानंद को अपनी परिस्थिति का पता चला। उसकी आँखों में आंसू छलक आए। फिर से एक बार कैद में बंद होने का भय उसकी आँखों में छा गया।

(क्रमशः)

LEARNING
MAKES A MAN
PERFECT

VISIT US
www.faithbook.in
FaithbookOnline

- "Faithbook" नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को "Faithbook" नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
- प्रकाशित लेख एवं विचारों से "Faithbook" के चयनकर्ता, प्रकाशक, निदेशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
- इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम्।

SAYYAM GRAPHICS
90820 78796 | 92704 56160